Original Article
ISSN (Online): 2350-0530
ISSN (Print): 2394-3629

International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
January 2025 13(1), 98–102

ENVIRONMENTAL THINKING IN THE FOLKLORE OF MIZORAM

मिज़ोरम की लोककथा में पर्यावरणीय चिंतन

Dr. Nidhi Verma [1]

[1] Assistant Professor, Naveen Government Music College, Durg, 491001, India

ABSTRACT

English: Mizoram is made up of two words. 'Mizo' literally means mountain dweller. This word is made up of the combination of 'Mi', 'Zo' and 'Ram'. 'Mi' means 'people', 'Zo' means mountain and 'Ram' means land. That is, the land where mountain people live. According to the second belief, the word 'Mizoram' is made up of the combination of 'Mizo' and 'Ram'. 'Mizo' means 'Mizo community' and 'Ram' means 'land'.
Mizoram is situated in a beautiful environmental area. It is a state full of natural wealth and very close to the environment. The Mizo people have a very close and deep relationship with the environment. The place where the Mizo tribe is currently settled used to be a dense forest. The Mizo people started a new society and culture by cutting down these dense forests of the mountains. Their ancestors lived in harmony with nature and environment. Their civilization was born and grew up in the lap of this environment. The main focus of Mizo folklore is nature and environment. Mizo society and culture originated and developed with the environment. This is the reason why the concept of Mizo folklore is built around the environment.
Mizoram is situated in the mountains and very good sources of water are found at the foot of these mountains, so there are many small and big rivers here. The story based on the formation of mountains and rivers is expressed in Mizo folklore.

Hindi: मिज़ोरम दो शब्दों से मिलकर बना है। 'मिज़ो' का शाब्दिक अर्थ पर्वतवासी है। यह शब्द 'मि', 'जो' और 'रम' के संयोग से बना है। 'मि' का अर्थ है 'लोग','ज़ो' का अर्थ है पर्वत तथा 'रम' का अर्थ है भूमि। अर्थात पर्वतीय लोगों के रहने की भूमि। दूसरी मान्यता के अनुसार 'मिज़ोरम' शब्द 'मिज़ो' और 'रम' के संयोग से बना हैं। 'मिज़ो' का अर्थ है 'मिजो समुदाय' और 'रम' का अर्थ है 'भूमि'।
मिज़ोरम एक खूबसूरत पर्यावरणीय क्षेत्र में अवस्थित है।जो प्राकृतिक संपदा से पूर्ण और पर्यावरण के काफी नजदीकता वाला राज्य है। मिज़ो लोगों का पर्यावरण के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध रहा है। वर्तमान में मिज़ो जनजाति जिस स्थान पर बसी हुई है पहले उस स्थान पर घना जंगल हुआ करता था। मिज़ो लोगों ने पहाड़ो के इन घने जंगलो को काट-काट कर एक नए समाज और संस्कृति की शुरुवात की। इनके पूर्वज प्रकृति और पर्यावरण के साथ मिल-जुल कर रहते थे इसी पर्यावरणकी गोद में इनकी सभ्यता ने जन्म लिया तथा पले-बड़े हैं। मिज़ो लोककथाओं का मुख्य केंद्र प्रकृति और पर्यावरण है। मिज़ो समाज एवं संस्कृति की उत्पत्ति तथा उत्थान पर्यावरण के साथ हुआ।यही कारण है कि मिज़ो लोककथा की परिकल्पना पर्यावरण के इर्द-गिर्द हीबनी हुई है। मिज़ोरम पहाड़ो में बसा हुआ है और इन पहाड़ो के तल में जल के बहुत ही अच्छे स्रोत पाये जाते है अतः यहाँ कई छोटी और बड़ी नदियाँ है। पहाड़ों और नदियों के बनने पर आधारित कथा मिज़ो लोककथा में व्यक्त है।

Keywords: Mountain, Community, Environment, Culture, Vegetation, Tradition, Concept पर्वतीय, समुदाय, पर्यावरण, संस्कृति, वनस्पति, परंपरा, परिकल्पना

Received 11 November 2024
Accepted 03 December 2024
Published 31 January 2025

DOI
10.29121/granthaalayah.v13.i1.2025.5954

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2025 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

मिज़ोरम की लोक कथाओं में पर्यावरण चेतना विषय की गहराई जानने तथा वर्तमान युग में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में विचारों को व्यक्त करने से पहले मिज़ोरम की लोक कथाओंमें

व्यक्तमिज़ोरम के ऐतिहासिक स्पर्श के साथ-साथ इस प्रदेश की भौगोलिक विशेषता पर भी संक्षिप्त टिप्पणी करें तो बेहतर होगा।

मिज़ोरम पूर्वोत्तर के आठ राज्यों में से एक सुंदर और पहाड़ी क्षेत्र वाला राज्य है। 1972 में केंद्र शासित राज्य बनने से पहले यह असम का हिस्सा था। 1891 में ब्रिटिश अधिकारी आने के बाद कुछ वर्षों तक उत्तरी भाग लुशाई पर्वतीय क्षेत्र असम तथा और आधा दक्षिणी भाग बंगाल के अधीन रहा। भारत सरकार और मिज़ोरम प्रदेश के बीच ऐतिहासिक समझौता के कारण 20 फरवरी 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

मिज़ो लोक कथाओं की शुरुआत जिस समय से हुई उसे दुहलियान भाषा (जिसे अब हम मिज़ो भाषा कहते हैं) रोमन लिपि में लिखा जाता था,किंतु मिज़ो लोक साहित्य की शुरुआत मिज़ो जनजाति के प्रारंभ से ही हुआ। मिज़ो लोक साहित्य मिज़ो जनजाति केजन-जीवन से संबंधित था। वह उनके सुख भरे दिन हो,दु:ख या उनके डरावने युद्ध की कथा , खेती बाड़ी, त्यौहार, लोक नृत्य, साधारण जन- जीवनजैसे सभी प्रकार के क्रियाकलाप इसके अंदरसमाहित हैं।

“हम जिसे मिज़ो साहित्य का नाम देते हैं उसमें केवल लेख या बाईबल के अनुवाद तथा पाश्चात्य साहित्य से संबंधित सक्रिय लेखही नहीं हैं बल्कि इसमें शामिल सभी लोक गीत तथा लोक कथाओं को साहित्य का नाम देते हैं।”1

मिज़ो जनजाति के लोग घटना और विभिन्न प्रकार की कथाओं को कहानी का नाम देते हैं तथा उनके पूर्वजों के द्वारा प्राप्त किया गया। मौखिक रूप अलिखित कहानी को लोक कथा का नाम दिया गया। मिज़ोरम कहानियों में से लोक कथाओंका सबसे बड़े रूप में एक भाग है क्योंकि इनमें जानवरों की कहानी जिसमें पशु पक्षियों को वहाँ के लोकभाषाभाषा में बात करवाई जाती है राजा-रानी की कहानी, परियों की कहानी, नदियों की कहानी, भूत प्रेत की कहानी, बच्चों की कहानी ऐसी कई कहानियाँ यहाँ की लोक कथाओं में विद्यमान है।

भौगोलिक नजर से देखेतो मिज़ोरम पटकाई पहाड़ी श्रृंखला में स्थित है। छोटी-छोटी पहाड़ियों से भारत सुंदर प्रदेश कहे तो भी ठीक समुचित ही होगा। इस प्रदेश के प्रथम निवासियों को लेकर अलग-अलग कई विचार धारणाएँ सुनने में आती है। वर्तमान में जो जनजातियों का इस प्रदेश में आरंभ 15वीं शताब्दी के आसपास मानी जाती है।

जीव को पाचन के संदर्भ में दो बड़े विषयों को लिया जा सकता है:-

1) झूम खेती
2) जीव जंतुओं का शिकार करना

1) झूम खेती

इस पहाड़ी खेत में प्रतिवर्ष दिसंबर से जनवरी के बीच जंगलों को काटा जाता है। जंगल की कटाई परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुसार काम में ज्यादा या थोड़ा होती थी। करीब कट जंगल को 2 महीने तक सूखने के लिए छोड़ दिया जाता फिर आग लगा दी जाती थी। इस तरह आवश्यकता से अधिक जंगल अर्थात पेड़-पौधे, बाँस आदि जलाया जाता था। इतना कुछ जंगलों का प्रयोग करने के बाद भी उन दिनों पर्यावरण विशेष के प्रति लोगों में नकारात्मक या सकारात्मक जैसी भाव नहीं के बराबर होती थी।खाने के तात्पर उन दिनों सीमित जनसंख्या के चलते पर्यावरण की समस्या कोई मुद्दा नहीं होता था। परंतु; विश्व के अंजान जातियों की तरह ही लोगों में हरे-भरे जंगल चारों तरफ हरियाली आदि के साथ विभिन्न मौसमों में खेलने वाले फूलों एवं जंगली फलों के प्रति अथाह प्रेम और लगा हुआ करता था। इस संदर्भ में 18वीं शताब्दी के प्रसिद्ध प्रख्यात कवित्री साइकूती के इन पंक्तियों पर कुछ टिप्पणी की जा सकती है।

"प्रिय उठो उत्तरी बन के फूलों का रसपान करें"2

इसमें कवित्री के प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति मुंह और लगाओ स्वाद ही लगाया जा सकता है दूसरी ओर व्याख्याता गीत का ढाबा के द्वारा कहानी इन पंक्तियों को भी संदर्भ में लिया जा सकता है।

"काश फैल पाता में रैमेइ वन,
चहुँ दिशा और चारों धाम

नीलाकाश तले हरे रौ से

पूछता फिरता बस एक ही बात,

क्या मुझ सा दीवाना कभी देखा है।"3

इन कवियों के मानस स्थिति को उनके प्रकृति प्रेम के रूप में लिया जा सकता है।

परंतु जीव जंतु संख्या बढ़ती गई तीव्र लोगों का आवश्यकताओं में भी इजाफा होने लगा। जंगली खेती के कारण ही नहीं वरन बाँस और लकड़ी के घर आदि के साथ-साथ व्यापार दृष्टि से भी लोगों ने जंगलों की बेरहमी से कटाई की शुरूआत किया है। अतः आज मिज़ोरम की प्राकृतिक सुंदरता दिन-ब-दिन घटने लगी है, साथ ही वातावरण में भी आमूलचूल परिवर्तन होने लगा है यथा प्रदेश का वातावरण पहले जैसा स्वास्थ्य और साफ नहीं रहा। मंद मंद पढ़ने वाली शीतल में ठंडी पहाड़ी हवा अनुभव निरलय ही होने लगा है।

पर्यावरणीयकथाओं में सृष्टि का निर्माण, प्रकृति प्रेम, प्रकृति सौन्दर्य एवं उसके महत्व को बतायागया है। मनुष्य और प्रकृति का एक अंतः संबंधहै। पर्यावरण के बिना मानव जीवन अपूर्ण है। मिज़ोरम कीलोककथाओंकाऐतिहासिकता का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। इस प्रकार की मिज़ो लोककथाएँ हैं - पहाड़ एवं नदियाँ, कुकुरमुत्ता, तारा-तारें आदि।

- **पहाड़ एवं नदियाँ**

मिज़ोरम एक पहाड़ी प्रदेश हैं। यहाँ के निवासी पहाड़ो, घाटियों और चोटियों पर निवास करते है। इन इलाकों के पहाड़ों एवं नदियों की उत्पत्ति पर आधारित प्रेमपरकलोककथा मिज़ो लोगों के लोक में है। इन कथाओं में पहाड़ो और नदियों काउद्भव कैसे हुआ है? यह इस प्रकार बताया गया है, "जब उपजाऊ मिट्टी प्राप्त हुई और उसमें पेड़-पौधे भी उगने लगे, उन पेड़ों में से एक बहुत बड़ा पेड़ थिङवानदौ था। जिसका अर्थ है – आकाश को छूनेवाला। यह पेड़ अंकुरित होने लगा, अब लोग उस पेड़ को काटना चाहते थे लेकिन उन्हें डर था कि चूलतेइनू ने जिस धरती को समतल बनाया था वह समतल धरती पेड़ की टहनियों के गिरने से खराब ना हो जाए। इसलिए धरती कोपूरी तरह सूखने से पहले उस पेड़ को काटने का साहस नहीं किया। एक दिन, वह समतल भूमि सुख गयी है या नहीं, उसको देखने के लिए एक चिड़िया को भेजा गया। उस भूमि की जाँच में वह उड़ती रही और क्योंकि वह बहुत हल्की थी इसलिए धरती पर ज़ोर से प्रहार नहीं कर पाई। वह जब वापस आयी तो उसने बताया कि सारी समतल धरती सुख गयी है और थिङवानदौ को काटा जा सकता है। किन्तु धरती पूरी तरह से सुखी नहीं थी, जब बड़ा पेड़ कटकर जमीन पर गिरा तो उसके टहनियों के दबाव से घाटियाँ और नदियाँ बन गए।"4

- **कुकुरमुत्ता**

जंगलो में कई प्रकार के वनस्पति पाये जाते है। इनमें से कुछ खाने योग्य होतेहै और कुछ नहीं। कुकुरमुत्ता के बारे में एकरोमांचक लोककथा है। कुकुरमुत्ता को हर जगह बड़े स्वाद से खाया जाता है। यह हमें जंगलों से प्राप्त होता है और आजकल इसे कई लोग घरों में भी उगाते है। मिज़ोरमके लोग भी बड़े चाव कुकुरमुत्ता को खातेहैं। कुकुरमुत्ता पर आधारित एक प्रचलित लोककथा है जिससे पता चलता है की इसकी उत्पत्ति कैसे हुई। कहा जाता है कि-

" मिज़ोरम के एक गाँव में दो बहने रहती थी। एक दिन वे खेत में खीरे तोड़ने आई। जहाँ छोटी बहन को ढेर सारे खीरे मिले गए, वही बड़ी बहन को एक भी खीरा नहीं मिला। बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा,'देखो मुझे एक भी खीरा नहीं मिल पाया है तुम मुझे थोड़ा खीरा दे दो'। छोटी बहन ने जवाब दिया- 'मैं चाहती हूँ कि ये सारे खीरे घर ले जाऊँ ताकि हम ये खीरे अपने माता-पिता के साथ मिलकर खाये'। इस बात पर बड़ी बहन को बहुत दुख हुआ और उसने मिट्टी के पहाड़ को उसे निगल लेने कि गुहार लगाई।

'मुझे निगल लो,

ए मिट्टी के बलशाली पहाड़

मेरी छोटी बहन ने,

नहीं दिया मुझे खीरा

मुझे निगल लो,

ए मिट्टी के बलशाली पहाड़'

और फिर सच में देखते ही देखते वह पहाड़ के नीचे दबती चली गयी और अंत में केवल उसका सिर बाहर रह गया।

कुछ समय के बाद छोटी बहन अकेली घर चली आई। जब उसके माता-पिता खेत से वापस पहुँचे तो उन्होंने बड़ी बेटी को घर में ना देखा, छोटी से पूछा वह कहाँ है। छोटी ने अपने माता-पिता को सब सच बता दिया कि कैसे उसने अपनी बड़ी बहन को खीरा देने से इंकार कर दिया था और कैसे मिट्टी के पहाड़ ने उसे निगल लिया।

माता-पिता को यह सुनकर दुख हुआ और उन्होंने अपनी छोटी बेटी को तुरंत लौट कर बड़ी बहन को मना कर वापस लाने को कहा। जैसे कि उसके माता-पिता ने कहा, छोटी बहन वापस अपनी बहन के पास पहुँची और बोली,

'मेंरी दीदी वापस आजा

नीले मिति माँ लायेगी

पिता लाएँगे घुंघरू

मेंरी दीदी घर वापस आजा'

आखिर बड़ी बहन धीरे-धीरे बाहर निकलने की कोशिश करने लगी, जब वह घुटने तक बाहर निकाल चुकी थी तो अचानक वहाँ शिकार करने वाले आ गए और उन्होंने उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया। लेकिन उसकी टांगे उस मिट्टी के पहाड़ में ही दबी रह गयी । उस जगह कुकुरमुत्ता उग आए और कुकुरमुत्ता की शुरुवात इसी तरह हुई।"5

- **तारा: तारें**

कृत्तिका तारागुच्छा को अँग्रेजी में प्लीयडीज कहा जाता है। यह पृथ्वी के सबसे नजदीक तारागुच्छों में से एक माना जाता है। यह इतना अधिक पास में है की आँखों से स्पष्ट नज़र आता है। कृत्तिकातारागुच्छाका महत्व विभिन्न सभ्यताओं में अलग-अलग रूप में देखने को मिलता है और इनका वर्णन भिन्न-भिन्न संस्कृति में भी देखने को मिलता हैं। कृत्तिका तारागुच्छा को भारतीय परंपरा में एक नक्षत्र का दर्जा प्राप्त है। मिज़ो पूर्वजों को वनवासी एवं असभ्य माना जाता था, यद्धपि इन्हें इन तारें के बारें में बहुत ज्यादा ज्ञान था, तारों को देखकर मिज़ो पूर्वजसमय का निरीक्षण करते थे। तारों को देख खेती के लिए उचित समय परजंगलों को काट कर जमीन को साफ किया करते थे और इन्हीं तारों को देखकर बच्चें जो शाम के भोजन के बाद रात्रि में गाँव के मैदान में 'पोनतोउ'(खेलना/मस्ती करना)करते थे। घर जाने के वक़्त निर्धारण का करते थे तथा लोग इस तारा गुच्छा को देखकर बीज की बीजरोपण आदि के समय का निर्धारण करते थे।

"सिरुकी बहनें जले हुए गाँव के ऊपर आसमान की ओर उड़ने लगे, आस-पास के गाँववाले ईर्ष्या की भावना से उन्हें देखने लगे। लड़कियाँ उड़ते-उड़ते आसमान के बादलों में घुस गई। फिर लोगों की नज़रों से ओझल होकर बहुत ऊपर आसमान में सितारे बन गई जो 'सिरुक' यानी 'छहसितारे' कहलाई गयी। कहा जाता था कि पहले ये अपने पिता के साथ थी जिन्हें'सिसरीह' अर्थात 'सातसितारे' कहते थे लेकिन उनमें से एक सितारा प्रकाश नहीं दे पा रहा था इस कारण उससे नफरत करके तूफान ने उसे उड़ा कर अदृश्य कर दिया। तभी से यह सितारे छ: ही है।

'सिरुक' अर्थात 'छहसितारे' जाड़ो के मौसम की शुरवात नवंबर महीने के आगमन पर संध्या क्षितिज के समीप उदय होता हैं। जब ये तारें आसमान के बीचोबीच पहुँचता है तब पोनतोउ अर्थात रात्रि में गाँव के मैदान में खेलते बच्चे अनुमान लगा लेते है कि घर जाने का समय हो गया है। उस समय बच्चे 'सिरुक' के संबंध में इस प्रकार के गीत गाया करते थे:

'सिरुकी वान लाईजोल अथ्लेङ लेह

ई टिन रुआल अङ दारलेनमोई'।

यथा,

'सिरुक आसमान के बीचोंबीच पहुँच गयी है,

आओ अब सब घर जाएँ प्रिय मित्रों’

फरवरी महीना के अंत में ‘सिरुक’ के अस्त होने के समय तक गाँव के बुजुर्ग लोग बाहर बैठ कर गप-शप करते थे। कहा जाता है कि अगर गाँव के बुजुर्ग लोग ‘सिरुक’ के अस्त होने तक यदि बाहर बैठते है तो खेत के लिए जंगल को काट कर साफ करने का समय हो गया है।”6

जैसे- चोङमोई और ह्राङछूआना(बृहस्पति और शुक्र) की कथा, मंगल की कथा, सप्तऋषि, ओरियन,वृषभ आदि।इन कथाओं के अतिरिक्त तारों पर आधारित और कई कथाएँ मिज़ो लोककथाओं में पायी जाती है।

मिज़ोरम प्रदेश भी कोई अपवाद नहीं रहा, यहाँ पर भी लोगों में घुटन भरी जिंदगी के तपश, मन में झंझट, अकेलेपन का एहसास आदि के चलते नशीले पदार्थों का सेवन आम बात हो गई है। प्रकृति सुंदर मंद-मंद ठंडी हवा और प्रकृति के स्वच्छ वातायन में जीवन यापन का युग है, प्रदेश के खोए हुए अतीत वन संप्रदायों की अमूल सुंदर और जीवन संगीत सुनते स्वच्छंद पर्यावरण एवं वातावरण में साँस लेकर आंतरिक परेशानियां कुंठाओं से मुक्त जीवन जीने और अपने प्रदेश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व को महत्वपूर्ण जीवन संदेश देने के लिए पर्यावरण की रक्षा महत्वपूर्ण से पूर्ण चेतना की जागृति परिपूर्ण ढंग से लोगों के मन में अंकुलित हो सके। इसकी हमें निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। तभी हम अपने प्रदेश के संपूर्ण अस्तित्व की रक्षा करने में सफल हो सकेंगे।

2. निष्कर्ष

“मिज़ोरम की लोककथाओं में पर्यावरण चेतना”देखने पर हमें पता चलता हैं कि यहाँ के लोक कथा में लोकजीवन में पर्यावरण के बारे में सभी व्यक्ति के अंदर इसके प्रति एक सजगता है। पर्यावरण से प्रेम संरक्षण एक अंतः मन से लगाव यहाँ के लोगों में है। हम भौगोलिक दृष्टि से देखे तो जिससे जो प्राप्त होता है, भरण पोषण होता है, यह सभी वस्तुएँ जंगल और जमीनों से ही प्राप्त होता है। जिससे हमारी आजीविका चलती है उसे हमारा लगाओ स्वतः हो जाता है। इसलिए मिज़ोरम के लोगों को पर्यावरण से लगाव अधिक है। इस कारण यहाँ के लोककथाओं के साथ-साथ लोकजीवन में भी पर्यावरण के बारे में ढेर सारी कहानियाँ प्राप्त होती हैं, जो पर्यावरण के प्रति चेतना को जागृत करने का काम करती है।

REFERENCE

मिज़ो लिट्रेचरर बी. ललथङा, पृष्ठ संख्या- 55
मध्यकालीन मिज़ो काव्य साहित्य के सात अमर गायक– सी. कामलोवा, पृष्ठ संख्या-77
मध्यकालीन मिज़ो काव्य साहित्य के सात अमर गायक– सी. कामलोवा, पृष्ठ संख्या-145
मिज़ो लोक साहित्य, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, पृष्ठ संख्या-
मिज़ोरम की लोककथाएँ, सरिता बरारा, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-123
मिज़ो लोक साहित्य, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, पृष्ठ संख्या-10